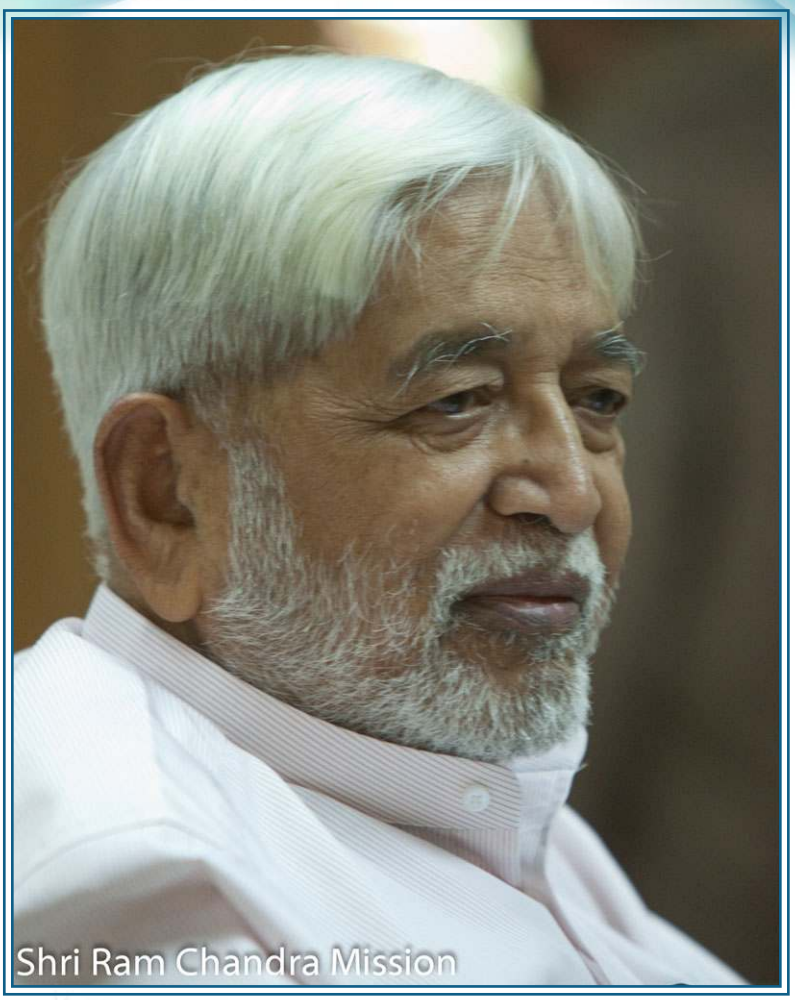

गुरुदेव की रिपोर्ट

चेन्नई में गुरुदेव

अभ्यासियों के साथ एक वार्तालाप में गुरुदेव ने कहा, "हमारा कर्तव्य है कि कार्य को शीघ्र सम्पन्न करने के विचार को विकसित करें और साथ ही भय की प्रवृति को हटायें। सामान्यतया जिस कार्य को तुरन्त करने की आवश्यकता होती है उसके साथ एक भय की भावना जुड़ी होती है लेकिन सहज मार्ग में हम शीघ्र कार्य करने की प्रवृति को विकसित करते हैं और भय की प्रवृति को हटाते है"।

नव वर्ष का उत्सव

१३ अप्रैल को तमिल नव वर्ष के अवसर पर गुरुदेव ने सत्संग कराया। प्रत्येक अभ्यासी का ध्यान अपने प्रिय गुरुदेव पर केन्द्रित था। सभी ने गुरुदेव के साथ व्यक्तिगत आन्तरिक जुड़ाव महसूस किया। गुरुदेव ने एक विवाह भी सम्पन्न कराया। यद्धपि वे बहुत ज्यादा थके हुये थे फिर भी वे कॉटेज में उन्हें अभिवादन करने आये अभ्यासियों से मिले।

१४ अप्रैल शनिवार को केरल के लोगों का नववर्ष 'वीषू' था। केरल से लगभग १५० अभ्यासी गुरुदेव का सान्निध्य पाने के लिये आये थे। शाम के समय गुरुदेव अपनी कॉटेज के बाहर बैठ गये और अभ्यासी दस–दस के समूह में उनके पास आये। गुरुदेव पूरे मनोयोग से सबसे मिले और बाद में कुछ कार्य हेतु अन्दर चले गये। उनमें से बहुत सारे अभ्यासियों को द्रवित होते हुये देखा जा सकता था।

गुरुदेव को अवकाश का समय देना

सोमवार १६ अप्रैल को गुरुदेव ने एक सिटिंग दी और मोरक्को के लगभग पाँच अभ्यासियों से बातचीत की। सभी अभ्यासियों की आँखों से आँसू बह रहे थे। एक बहिन ने उनको अपने किसी प्रियजन की मृत्यु के बारे में बताया और गुरुदेव ने कहा, "प्रत्येक को अपना हृदय इतना विशाल करना चाहिए कि वह सबको अपने अन्दर समा सके। आप देखते हैं कि कितने अभ्यासी आते जाते हैं और वे सब मालिक के हृदय में रहते हैं। जब हम केवल कुछ को ही प्रेम करते हैं तब उनके जाने पर हमें दु:ख का अहसास होता है, लेकिन जब हृदय खुला होता है और यह सबको प्रेम करता है तब दु:ख नहीं होता।"

गुरुदेव ने अपना असंतोष व्यक्त करते हुये कहा कि कॉटेज के अन्दर हमेशा बहुत ज़्यादा लोग होते हैं और वे सभी उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। यद्धपि वे जहाँ तक सम्भव हो प्रत्येक से मिलने की कोशिश करते हैं। इसके बाद गुरुदेव ने एक अवकाश लेने और किसी ऐसे स्थान पर जाने का निश्चय किया जहाँ वे विश्राम कर सकें। इस स्थल को गुप्त रखा गया जिससे कि गुरुदेव को आवश्यक विश्राम और एकांत मिल सके। २७ अप्रैल को गुरुदेव कॉटेज में वापस आ गये।

बाबूजी का जन्म दिवस समारोह

गुरुदेव ने रविवार २९ अप्रैल को प्रात: सत्संग कराया और आठ शादियाँ करायी। इसके पश्चात कॉटेज में कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई। शाम के समय भाई भार्गव और भाई कमलेश पटेल के साथ डेनमार्क में ब्रैड सैन्डे आश्रम में एक वीडियो कॉल रखी गयी और गुरुदेव उपकरणों की जाँच के लिये आये क्योंकि अगले दिन उन्हें वहाँ के अभ्यासियों को सम्बोधित करना था।

३० की सुबह गुरुदेव बहुत जल्दी जाग गये। उन्होंने सत्संग कराया जोकि लगभग १ घंटा १० मिनट तक चला। तत्पश्चात उन्होंने अभ्यासियों को सम्बोधित किया और 'व्हिसपर्स फ्रॉम दि ब्राइटर वर्ल्ड' भाग–४ और एक ऑडियो सी. डी. जिसमें कुछ अभ्यासियों ने अपनी आवाज़ में संदेशों को बोला है का विमोचन किया। विमोचन के पश्चात इसमे से कुछ संदेशों को सुनाया गया और गुरुदेव ने एक बार फिर एक छोटी वार्ता में इन संदेशों को पढ़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

सुबह ११ बजे भाई बालासुब्रमन्यम ने वार्ता दी और गुरुदेव ने अपने कार्यालय से ही इसे बहुत ध्यान से सुना। यह एक बहुत प्रभावशाली वार्ता थी जिसने गुरुदेव के साथ साथ सभी अभ्यासियों को भी मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने गुरुओं के जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन किया और हमसे अनुरोध किया कि हमें इन महान विभूतियों की केवल प्रशंसा या चापलूसी नहीं करनी है बल्कि उनके जीवन से

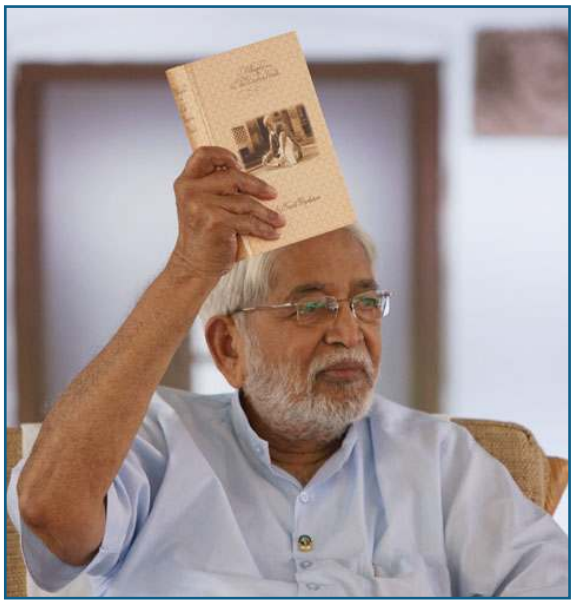

सीखना है और जैसा जीवन उन्होंने जिया उसी तरह से हमें भी जीना है।

थके होने के कारण गुरुदेव को यूरोपियन सेमिनार के लिए पूर्वनियोजित वीडियो कॉल को स्थगित करना पड़ा। दोपहर के समय वह रोमानिया से आए लगभग ५ अभ्यासियों से मिले। गुरुदेव इस बात से चिन्तित थे कि रोमानिया और साथ-साथ रूस में, पश्चिम की धनाढ्य संस्कृति वहां की स्थानीय संस्कृति को नुकसान पहुँचा रही है।

जब शाम का सत्संग चल रहा था तो गुरुदेव अपनी गोल्फ गाड़ी में आश्रम में घूम रहे थे। वह कई बार मार्ग में खड़े बच्चों से मिलने के लिए रूके। बहन सोम्या और उनके समूह द्वारा एक नृत्य कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया और यह आनन्ददायक प्रदर्शन शाम के सत्र के समापन का एक उपयुक्त तरीका था।

उत्सव के पश्चात

४ मई की शाम को गुरुदेव बगीचे में एक विशाल वृक्ष के प्रतिरोपण के कार्य का निरिक्षण करने के लिए गए। काफी आरंभिक कार्य किया जा चुका था और कई कार्यकर्ताओं ने एक साथ मिलकर वृक्ष को उठा लिया और उसे नए स्थान पर प्रतिरोपित कर दिया। गुरुदेव ने सम्पूर्ण प्रक्रिया देखी, वहां पर कार्य कर रहे सभी कार्यकर्ताओं को निर्देशित किया और फिर वृक्ष को पानी दिया।

गुरुदेव ने अमेरिका के एक अभ्यासी भाई ट्रॅवर वैल्टमॅन द्वारा तैयार की गई टैड (TED) प्रस्तुती देखी जिसका शीर्षक था 'अकेलेपन का रूपान्तरण'। उन्होंने बताया कि हमारे जीवन कितने शोरपूर्ण हो गए हैं और किस तरह ध्यान के द्वारा हम अपने जीवन में आन्तरिक सम्बन्ध दोबारा स्थापित कर सकते हैं। एक शाम जबकि गुरुदेव, अपने शयनकक्ष से कार्यालय की ओर जाने वाले गलियारे में चल रहे थे, वह एक अभ्यासी बहन से मिले और सहज बोध से उन्होंने एक थैले में से एक फल निकाला और उन अभ्यासी बहन को दे दिया। फल लेने के बाद उन अभ्यासी बहन ने गुरुदेव को बताया कि वे गर्भवती हैं और गुरुदेव ने कहा, "आशिर्वाद"।

एक अन्य शाम को गुरुदेव खाने से पहले एक अभ्यासी से बात कर रहे थे जिसने तमिल की एक कहावत को दोहराया कि "एक चीता चाहे कितना भी भूखा हो किन्तु घास नहीं खाता।" गुरुदेव ने कहावत को विस्तारपूर्वक समझाया कि यह चीते का कोई अहंकार या घमंड नहीं है बल्कि यह उसकी स्वाभाविक प्रवृति है और वह स्वाभाविक रूप से प्रकृति के नियमों का पालन करता है। इसी प्रकार पशुओं और पौधों की प्रजातियाँ हैं जोकि अपने प्राकृतिक स्वभाव से बन्धे रहते हैं और उसमें न कोई समझौता करते हैं और न ही उससे भटकते हैं। इन्सान को भी इसी प्रकार होना चाहिए कि वह 'मानवीय गुणों' के साथ जिये और उन्हें

ही प्रकट करे जोकि उसकी स्वाभाविक प्रकृति है न कि पाश्चिक गुणों को।

बिदर के अभ्यासियों के लिए गोष्ठी

१४ मई को गुरुदेव इलाहबाद बैंक गए और उसके बाद बिदर से आए लगभग १०० अभ्यासियों से मिलने के लिए डोर्म-ए में गए। वे हिन्दी में बोले और उसके बाद वहां पर एकत्रित सभी अभ्यासियों को सिटिंग दी। शाम को गुरुदेव स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे थे और उन्हें सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। फिर पता चला कि बैंक में जहाँ वे सुबह गए थे, काफी धूल थी, जिसके कारण उन्हें तकलीफ़ हुई। रविवार १३ मई को गुरुदेव ने सत्संग कराया जिसके बाद भाई चक्रपाणी ने तमिल में एक संक्षिप्त वार्ता प्रस्तुत की जिसमें उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि इन्सान में दूसरों की जरूरत और परेशानी के समय उनकी सहायता करने का अत्याधिक सामर्थ्य है जोकि मशीनों की शक्ति और सामर्थ्य से कहीं अधिक है। गुरुदेव हमारे मार्गदर्शक के रूप में हमारे साथ हैं। हमें अपनी इन गुप्त शक्तियों से, जोकि हमारे अन्दर विराजमान हैं, अपने मार्ग की सभी रुकावटों को दूर करना चाहिए और कम से कम समय में अपने लक्ष्य तक पहुँचना चाहिए।

गुरुदेव रूसी भाषा और अन्य भाषाओं को सीखने के विषय में कुछ बता रहे थे। जब एक अभ्यासी ने कहा, "गुरुदेव मैं एक नई भाषा सीखने के लिए स्वयं को तैयार नहीं कर पाता हूँ क्योंकि मुझे उसमें कोई उद्देश्य दिखायी नहीं देता"। गुरुदेव ने कहा, "उद्देश्य यह है कि आप उस भाषा के ज्ञाता हो जायेंगे और क्या उद्देश्य आप चाहते हैं? पाश्चात्य संस्कृति ने हम सभी पर बहुत बुरा प्रभाव डाला है। हम जब भी कुछ करते हैं हम जानना चाहते है कि हम क्या पायेंगे। जब मैं किसी से ध्यान आरम्भ करने के लिए कहता हूँ तो वे पूछते हैं कि वे क्या पायेंगे। आप कुछ पाते नहीं बल्कि कुछ बनते हैं। भाषा सीखने के विषय में भी यही बात सत्य है।

अंडमान और निकोबार द्वीप एवं हुबली (उत्तरी कर्नाटक) के लिए संगोष्ठी

अंडमान–निकोबार द्वीप से आए अभ्यासियों का एक समूह तथा हुबली से आये अभ्यासियों का एक और समूह १५ मई से करीब एक सप्ताह के लिए आश्रम में रुका हुआ था। गुरुदेव यह जानकर प्रसन्न थे कि लगभग १०० अभ्यासी अंडमान और निकोबार द्वीप से आए हैं और यद्यपि यात्रा करना खर्चीला था, उन्होंने इस संगोष्ठी में आने का प्रयास किया था।

"अतः यह प्रेम ही है जो स्थान और समय की दूरी को महत्वहीन कर देता है। यदि आप किसी से प्रेम करते हैं तो आप परवाह नहीं करते कि वह व्यक्ति कहाँ है; आप कहते हैं, "वह हमेशा मेरे मन में बसता है या बसती है।" इसलिए जब तक आप 'उसे' अपने मन में, या जैसे कि हम कहते हैं, अपने दिल में नहीं बसा लेते, हमें स्थान और समय की माँगों का सामना करना पड़ता है, स्थान और समय की परिसिमा में रहना पड़ता है। इसलिए चाहे आप अभ्यासी हों या न हों, आप एक ऋषि हों या न हों, अगर आप प्रेम नहीं करते तो फ़ासला (अलगाव) रहता है।"

१८ मई २०१२, चेन्नई

गुरुदेव इन अभ्यासियों से दिनांक १८ को मिले। भाई सोमकुमार ने एक वार्ता दी और बाद में गुरुदेव ने एक वार्ता तथा एक सिटिंग भी दी। वार्ता में उन्होंने कहा, "यदि प्रेम है तो स्थान और समय की दूरियाँ महत्त्वहीन हो जाती हैं।"

१९ मई को गुरुदेव एक करवट पर सोए और अपनी पीठ में दर्द के कारण जाग गये। दर्द–निवारण के लिए उनका कुछ इलाज करना पड़ा। शाम को गुरुदेव ने पुस्तक–भंडार में स्थापित नई फोटो गैलरी को देखने जाने की योजना बनाई थी। फोटो गैलरी जाने के पश्चात् वे अपने कार्य–कक्ष के लेखा–क्षेत्र में गये और वापस कुटीर आने से पहले वहाँ कुछ देर रुके। सायंकालीन भोजन के बाद करीब दस वर्ष का एक छोटा लड़का गुरुदेव से मिलने और उन्हें एक पत्र सौंपने के लिए उत्सुक था। वह आखिरकार गुरुदेव से मिल पाया और उन्होंने उसके साथ काफी समय बिताया। लड़के ने अपनी समस्या गुरुदेव के सामने अभिव्यक्त की और गुरुदेव ने उसे कुछ उपाय बताया। यह देखना रोचक था कि कैसे गुरुदेव ने इस लड़के की चिन्ता पर पूरी तरह ध्यान दिया।

आश्रम में निर्माण कार्य

ध्यानकक्ष की छत पर टाइलें हटा दी गई हैं और पानी के स्राव (रिसन) की मरम्मत करने के लिए कॉन्क्रीट की नई परत लगा दी गई है। इस काम में मदद करने के लिए कई केन्द्रों से स्वयंसेवक सप्ताहान्तों के दौरान आ रहे हैं। नियमित सत्संग पुस्तकालय खंड के तलघर में स्थानान्तरित किए गए और रविवार का सत्संग ध्यानकक्ष में संचालित किया जा रहा था। २० मई को गुरुदेव ने पूरे एक घंटे का सत्संग कराया। दोपहर को जब लंदन आश्रम का उद्घाटन हो रहा था तब गुरुदेव ने लन्दन आश्रम में एकत्रित अभ्यासियों को एक वीडियो–के द्वारा वार्ता दी। यह एक बहुत छोटा सत्र था पर लन्दन के अभ्यासी गुरुदेव को देखकर बहुत खुश थे। शाम को गुरुदेव का अंडमान निकोबार द्वीप समूह से आए अभ्यासियों के साथ एक समूह फोटो लिया गया। इसके बाद उनकी चिकित्सा–केन्द्र जाने की योजना थी परन्तु उन्होंने अचानक अपना इरादा बदला और वे कॉटेज के भीतर वापस लौट गए। वे हॉल में बैठे और उन्होंने सबको एक सिटिंग दी। सभी अभ्यासियों के लिए निश्चय ही यह एक सुखद आश्चर्य था।

२१–२६ मई के बीच गुरुदेव गायत्री में थे और अभ्यासियों को वहाँ जाने से टालने के लिए कहा गया था। गुरुदेव दिनांक २६ की शाम को आश्रम आये। शाम को वे मुंबई से आये हुए कुछ अभ्यासियों के साथ उनके आश्रम की परियोजना के बारे में चर्चा करते हुए काफी व्यस्त थे।

कर्नाटक और कोयंबटूर के केन्द्रों से आए अभ्यासियों के लिए संगोष्ठी

दिनांक २७ को गुरुदेव ने लगभग ६०० अभ्यासियों के लिए, जो कर्नाटक तथा कोयंबटूर के विभिन्न केन्द्रों और चेन्नई तथा उसके आसपास के केन्द्रों से बड़ी संख्या में आये थे, सत्संग का संचालन किया। बाद में वे डॉर्म 'ए' गए और उन्होंने वहाँ एकत्रित अभ्यासियों को एक वार्ता दी। उन्होंने मुख्यतः 'प्रेम' विषय पर जोर दिया और कहा, "अगर हम 'उनसे' प्रेम नहीं कर सकते तो हम उन सबसे कैसे प्रेम कर सकते हैं जिनसे 'वे' प्रेम करते हैं। उन्होंने अभ्यासियों के बिन्दुओं और प्रदेशों की प्रगति इत्यादि के बारे में ऊपर की ओर संकेत करते हुए जोर देकर कहा, "यदि हम वहाँ नहीं हैं तो हम कहीं नहीं हैं" और कहा कि हमें बिन्दुओं और प्रदेशों पर ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचने की बात पर, न कि निकटतम सोपानों पर, अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

गोआ से अभ्यासी

२७ से लेकर ३१ मई तक गुरुदेव फिर से गायत्री में थे। ३१ को गुरुदेव गोआ से आये अभ्यासियों से मिलने के लिए आश्रम आये। करीब ११ बजे वे डॉर्म 'ए' में गये जहाँ पर सिर्फ २५ अभ्यासी उपस्थित थे और उन्होंने कहा कि वे आशा कर रहे थे कि करीब १५०–२०० अभ्यासी होंगे। गुरुदेव ने भाषण दिया और फिर सत्संग का आयोजन किया। संभाषण में गुरुदेन ने इस बात पर जोर डाला कि सहज मार्ग एक बहुत ही सरल एवं प्रभावकारी अभ्यास है और ऐसे सरल अभ्यास को किसी को भी समझाने में तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए। सत्संग के बाद गुरुदेव बहुत थके हुए लग रहे थे और धीरे से अपनी कुटीर कि तरफ़ बढ़ गये।

रात को खाने के पश्चात गुरुदेव ने ओमेगा स्कूल के भूतपूर्व छात्र मण्डली के सदस्यों से भेंट की। बहुत ही छोटी पूंजी होने के बावजूद, गुरुदेव काफ़ी खास ध्यान दे रहे थे कि वे कैसे हिसाब रखने वाले थे, आमदनी, खर्चा इत्यादी। यह हम सब के लिए सीख थी कि उद्योग चाहे छोटा हो या बड़ा, प्रयत्न एक समान ही होना चाहिए।

ओमेगा के भूतपूर्व छात्रों के लिए सेमिनार

जून १ को गुरुदेव ने पुस्तकालय के ऊपर स्थित सम्मेलन कक्ष का उद्घाटन किया और साथ ही एक सप्ताह के सेमिनार का भी उद्घाटन किया, जोकि ओमेगा स्कूल के उन बच्चों के लिए जो पिछले दो सालों की १२वी कक्षा से पास हुए थे। गुरुदेव ने उनसे बात की और फिर एक सिटिंग भी दी। वे फिर दोपहर में गायत्री के लिए रवाना हुए। वे हैदराबाद जाने की सोच रहे थे क्योंकि 'काँन्हा योजना' बहुत अच्छी चल रही थी और वे उसका पंजीकरण खुद अपने आप करवाना चाहते थे। अंतत: अपनी सेहत कि वजह से उन्हें यात्रा को रद्द करना पड़ा।

चूँकि वे स्वंय हैदराबाद नहीं जा पाए, अत: उन्होंने काँन्हा योजना के स्वयं–सेवकों को ६ जून को गायत्री आने का निमंत्रण दिया, उनके साथ लंबी बात–चीत की तथा उन सबको तोहफे दिए और इस योजना को सफल बनाने के लिये बधाई दी।

शुक्रवार ८ जून को गुरुदेव भाई एम.डी. संथनगोपालन के घर उनके पास एक हफ़्ता रहने के लिए गये।

गुरुवार १४ जून को गुरुदेव आश्रम वापिस आए। अगले दिन उनको कुछ दाँत का इलाज करवाना था और साफ़ ज़ाहिर था कि उनको काफी दर्द था और उनका चेहरा भी सूजा हुआ था।

लखनऊ के अभ्यासियों के लिए सेमिनार

लखनऊ से करीब ६५० अभ्यासी सेमिनार के लिए एकत्रित हुए थे। भाई चक्रपाणी ने हिंदी में बात की और कुछ गानों की पंक्तियों को मिलाकर, जिसमें प्यार और आकांक्षा का सार भरा हुआ था, बड़े ही सरल तरीके से संदेश को व्यक्त किया।

शनिवार को गुरुदेव ने प्रशिक्षकों को सिटिंग दी जिसके बाद वे थोड़े अस्वस्थ महसूस कर रहे थे और आराम करने के कारण लखनऊ के अभ्यासियों से नहीं मिल पाए। भाई विनोद मिश्रा ने बात की कि "कैसे हमे अपने गुरुदेव को हर परिस्थिति में खुश रखना है"। गुरुदेव बाद में इस विषय पर बात कर रहे थे और उन्होंने दान देने के भाव पर जोर दिया कि कैसे उसे एक आंतरिक भक्ति भाव से देना चाहिए।

शाम को गुरुदेव की दो सभायें थी। एक लखनऊ एवं दूसरे केंद्र के अभ्यासियों के बच्चों के साथ और दूसरी केंद्रों के प्रशिक्षकों के साथ। करीब ८० बच्चे और युवक गुरुदेव से मिले और उन्होंने सबको मिठाइयाँ दी और उनसे बात भी की। फिर उन्होंने लखनऊ केंद्र के १७ प्रशिक्षकों को सिटिंग दी।

गुरुदेव ने १७ तारीक को सवेरे का सत्संग कराया। चेन्नई और आसपास के केंद्रों का एक बड़ा समूह उपस्थित था और लखनऊ से आये समूह को मिलाकर कक्ष भर गया था।

चूँकि मालिक लखनऊ के अभ्यासियों से पिछले दिन नहीं मिल सके थे, इसलिए उन्होंने डॉर्म 'ए' में प्रातः ११ बजे उनसे मिलने का निश्चय किया। मालिक ने हिन्दी में वार्ता दी, जिसमें उन्होंने अच्छी और उचित चीजों को न टालते हुए वर्तमान में करने की आवश्यकता और महत्ता पर बल दिया। उन्होंने अवश्यंभावी आयु–प्रक्रिया के बारे में वार्ता देते हुए कहा कि कैसे लोगों का यह अनुचित भ्रम है कि अध्यात्मिकता का अनुसरण वृद्धावस्था में किया जा सकता है। उन्होंने बुद्धिमानी के बारे में बाबूजी के कथन को दोहराते हुए कहा कि बुद्धिमानी इसमें है कि हम ऐसे जियें मानो अगले ही क्षण हमारी मृत्यु होने वाली है। अपनी वार्ता के पश्चात् मालिक ने कहा कि क्या उन्हें फिर से सिटिंग देनी चाहिए, क्योंकि प्रत्येक ने प्रातःकालीन सत्संग में उपस्थिति दी थी। अभ्यासियों ने सिटिंग के लिए निवेदन किया। सभी एकत्रित अभ्यासी पूरे सत्र में पूर्णतः अनुशासन में रहे और मौन बैठे रहे तथा मालिक को बिना भीड़ एकत्रित किए स्वच्छन्द चलने की स्वतंत्रता प्रदान की।

मालिक एवं उनके कार्य

मालिक ने ह्वान एनरिकेज़ द्वारा, "क्या हमारे बच्चे विभिन्न प्रजातियों के होंगे?" नामक शीर्षक की टी ई डी (TED) वार्ता देखी। यह एक बहुत ही रुचिकर एवं विचारोत्तेजक वार्ता थी। उन्होंने यह ध्यानपूर्वक सुनी और मानव जाति के विकास का कतिपय अवलोकन किया।

कुछ सप्ताह से मालिक के दाहिने कन्धे में दर्द हो रहा है और वे शारीरिक चिकित्सक की निगरानी में धैर्यपूर्वक प्रतिदिन व्यायाम करते हैं। उनकी सामान्य गतिविधियाँ सभी परिस्थितियों में जारी रहती हैं। जब उन्हें यह सूचित किया गया कि उनके स्वास्थ्य के कारण, नए प्रशिक्षक सम्बन्धी कई प्रस्ताव लम्बित चल रहे थे तो उन्होंने उनमें से चार प्रस्ताव तुरंत लाने को कहा।

मालिक बच्चों के साथ समय व्यतीत करतें हैं और उनके साथ सहर्ष विचारों का आदान–प्रदान इस प्रकार करते हैं मानो वे भी उनमें से एक हों। एक युगल नवजात शिशु के साथ उनसे मिलने आए और उसके नामकरण के लिए कहा। मालिक ने कुछ क्षण विचार करने के बाद उसे 'सरस्वती' नाम दिया। उन्होंने शिशु से बात की और प्रत्युत्तर में शिशु मुस्कुराई और हँसने लगी। एक अभ्यासी ने उनसे पूछा, "मालिक! क्या शिशु आपसे संवाद करते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं वे संवाद नहीं करते, किन्तु जब वे मुझे पहचानते हैं तो मुस्कुराने लगते हैं।" हममें से ऐसे कितने हैं जो मालिक से पहली बार मिले और उन्हें पहचान पाये हों?

युवा कार्यक्रम

पनवेल, नई मुंबई, महाराष्ट्र

दिनांक २० से २२ अप्रैल को पनवेल आश्रम में १३ से १७ वर्ष की आयु के पैंतालीस बच्चों का एक शिविर आयोजित किया गया। चर्चा हेतु चयनित विषय, इस आयु–समूह से सम्बन्धित मुद्दों पर प्रकाश डालने वाले थे। शिविर का प्रारम्भ प्रार्थना–सत्र से किया गया जिसमें प्रत्येक बच्चे को मोमबत्ती जलाने एवं ईश्वर के प्रति उनकी धारणा के बारे में कुछ बोलने को कहा गया। प्रतिष्ठित महापुरुषों के नाम एवं उनके महान गुणों के नाम से समूह बनाए गए। उदाहरणार्थ, 'मदर टेरेसा–देखभाल करने वाली मोमबत्तियाँ', 'चारीजी, मालिक–प्रेमदीप', 'अब्राहम लिंकन–विश्वास की मशाल' इत्यादि। प्रत्येक समूह को एक अधूरी कहानी दी गई, जिसे उन्हें पूरा करना था तथा कठपुतलियों एवं मुखौटों का प्रयोग कर अभिनय के साथ प्रस्तुत करना था।

पेशेवर अभ्यासियों द्वारा उनसे संबन्धित क्षेत्रों के विभिन्न विषयों, जैसे सद्भावना, प्रबन्धन, स्वास्थ्य एवं पोषाहार, ऊर्जा तथा उत्साहवर्द्धन विषयों पर पारस्परिक कार्य–सत्र आयोजित किए गए। छायाचित्र के सत्र मे बच्चे, आश्रम के हरियाली क्षेत्र में विस्मयकारी छायाचित्र खींचते पाये गये। 'खजाने की खोज' क्रीड़ा का बच्चों ने आनन्द उठाया। सहभागियों को सामूहिक छायाचित्र की प्रति एक स्मृति चिह्न के रूप में प्रदान की गई।

मणपाक्कम, चेन्नई

दिनांक २७ मई को मणपाक्कम में १७ से ३० वर्ष के आयु–समूह के युवाओं हेतु 'साधारण और प्रकृति के अनुकूल रहो' विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। लगभग ५० युवाओं ने आश्रम के चारों ओर 'प्रकृति भ्रमण' में भाग लिया, जो वृक्ष बचाने हेतु कार्यरत एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन द्वारा आयोजित किया गया था। सहभागियों को आश्रम में लगे विभिन्न वृक्षों की पहचान कराई गई एवं उनके महत्व की जानकारी दी गई। 'साधारण रहने का महत्व' विषय पर प्रकाश डालते हुए एक वार्ता प्रस्तुत की गई तथा इस पर मालिक का दृष्टिकोण भी सम्मिलित किया गया। सहज मार्ग के चौथे उसूल पर एक समूह पठन एवं चर्चा की गई। यह कार्यक्रम आपसी मेल जोल वाला, प्रायोगिक एवं उपयोगी था।

बनशंकरी आश्रम, बैंगलोर

बैंगलोर के युवाओं को एक साथ लाने के सतत प्रयास में अनौपचारिक सत्र जनवरी २०१२ में शुरु किये गये। महीने में एक बार रविवार के दिन दो घंटे के सत्र आयोजित किये जा रहे हैं तथा संख्या धीरे–धीरे परन्तु निश्चित तौर पर बढ़ रही है। इस सत्र का उद्देश्य इस समूह को मिशन की गतिविधियों में भाग लेने तथा लक्ष्य की ओर बढते हुए, इस यात्रा में, एक दूसरे से सीखने को प्रेरित करना है। प्रत्येक सत्र का विषय साधना पर आधारित न होकर, अन्य पहलुओं पर जैसे 'मैं सहज मार्ग में क्यों हूँ', 'मैं कौन हूँ' और 'जीव से पूर्ण बनने तक' पर आधारित थे। प्रत्येक सत्र में कुछ नया शामिल करने की कोशिश की गई जिसमें कला, संगीत, कविता, नाटक आदि सीखा जा सके। आत्मदर्शन एवं विविध विषयों पर चर्चा के अलावा खेल एवं गतिविधियों को भी शामिल किया गया जिससे कि मनोरंजन एवं मैत्री होने का एहसास प्रतिभागियों में हो। प्रत्येक सत्र गुरुदेव की वार्ता एवं विडियो के साथ समाप्त हुए ताकि विषय को स्पष्ट एवं विचारों को सुदृढ़ बनाया जा सके। आगामी महीनों के लिये अन्य गतिविधियाँ जैसे आवासीय शिविर, निकट केन्द्रों का भ्रमण, नाटक प्रस्तुत करना, फोटोग्राफी प्रतियोगिता आदि नियोजित की गयी हैं। हम आशा करते हैं कि यह समूह गुरुदेव के मार्गदर्शन में उन्नति करेगा तथा ये युवा अपने भाईयों एवं बहिनों के सहयोग से कॉलिज अथवा नौकरी से होने वाले दबाव का सामना कर पायेंगे।

महाराङ्ग

आध्यात्मिक साधना के महत्व पर युवाओं का ध्यान पुन: केन्द्रित करने के उद्देश्य से १४ एवं १५ अप्रैल को दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन मुम्बई के पनवेल आश्रम में किया गया जहाँ मुम्बई, पुणे एवं नासिक के ७८ अभ्यासियों ने भाग लिया। इस सेमिनार का विषय, 'उनके तौर तरीकों का अनुशरण करना' था। इसके तीन सत्र थे। जिसमें तीन प्रश्नों के उत्तर देने थे कि 'मुझे क्या करना चाहिये?, मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिये? और मुझे अन्दर से कैसा होना चाहिये?' जिसमें साधना, चरित्र निर्माण, प्रवृत्ति एवं परिवर्तन विषय सम्मिलित थे। इसके बाद दस उसूलों पर गतिविधियों का आयोजन हुआ। एक समन्वयकर्ता ने मिशन में स्वयंसेवा के महत्व को समझाया। दूसरे दिन प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन हुआ जिसमें अनुभवी अभ्यासियों, प्रशिक्षकों, पदाधिकारियों, समन्वयकर्ताओं ने साधना के मूल तत्व, नित्य साधना पर स्पष्टीकरण एवं अनुभव सम्बंधित प्रश्नों के उत्तर दिये जिससे युवाओं के अनेक संशयों को दूर किया गया। प्रवृत्ति एवं परिवर्तन पर प्रस्तुति के बाद अनेक मनोरंजक गतिविधियां की गईं। पूणे के भाई अमोल ने 'ध्यान' पर २–डी चलित विडियो क्लिप दिखाई। कुछ भजनों के बाद सहज मार्ग पुस्तकों की झलक प्रस्तुत की गयी।

नोयडा, उत्तर प्रदेश

नोयडा केन्द्र के युवा मंडल ने ६–११ वर्ष के बच्चों के लिये मई एवं जून में अनेक गतिविधियां नियोजित कीं। इस मंडल ने लगभग ६० बच्चों के लिये सप्ताह मे दो बार ग्रीष्म कक्षाओं का आयोजन किया। इन कक्षाओं में 'मित्रता', 'एक दूसरे के साथ बांटना', 'सहयोग करना' 'सुनने की कला' आदि भाग शामिल थे। युवा मंडल शीघ्र ही कक्षा ६ से १० तक की कक्षायें आयोजित करेगा तथा मूल्य आधारित शिक्षा पर कक्षायें आयोजित करने के लिये स्कूलों से सम्पर्क करने की योजना बना रहा है।

बच्चों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर

मणपाक्कम, चेन्नई

७ से ९ मई को ७ से १३ वर्ष की आयु वर्ग के १२० बच्चों का समूह मणपाक्कम आया। पहले दिन 'अनुशासन में प्यार' विषय पर आधारित अनेक गतिविधियां, कला सत्र और आऊटडोर खेल थे। बच्चों को नैतिक मूल्यों पर आधारित एक फिल्म दिखाई गई। दूसरे दिन का विषय 'सादगी और संवेदनशीलता' था। बच्चों को स्फूर्तिशील एवं व्यस्त रखने के लिए एक कला सत्र, आपसी बातचीत तथा शिक्षाप्रद प्रश्नोत्तरी सत्र, और एक सत्र बच्चों द्वारा व्यवहारिक रूप से कुम्हार के पहिए पर हाथ आजमाने का रखा।

तीसरा दिन 'स्वास्थ और प्रकृति के साथ सामंजस्य' पर आधारित था। 'शारीरिक रचना' पर एक वृत्तचित्र का प्रदर्शन, टी–शर्ट चित्रकारी, कठ पुतली का खेल और खजाने की खोज सभी के लिए मनोरंजन का सत्र था। शिविर के दौरान बनाए गए उपहारों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। कार्यक्रम के विस्तार के लिए दूसरे दिन एक क्षेत्रिय एन. जी. ओ. द्वारा "ट्री–वॉक" नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अनेक बच्चों ने इसमें भाग लिया और आश्रम में विभिन्न प्रकार के पेड़ों की जानकारी प्राप्त की। अभिभावकों और बच्चों से बहुत ही सकारात्मक एवं प्रेरणादायक प्रतिपुष्टि मिली।

वड़ोदरा, गुजरात

शनिवार, २६ मई २०१२ को, वड़ोदरा केन्द्र द्वारा बच्चों के एक दिवसीय ग्रीष्म कालीन शिविर का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों की कुल संख्या ६० थी। कार्यक्रम में लालाजी और बाबूजी महाराज के स्लाइड शो, गानें, कहानियां और खेल शामिल थे।

बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों द्वारा नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षाओं का लाभ उठाया।

पनवेल, नई मुंबई

२५ से २७ मई को ८ से १२ वर्ष तक के बच्चों के शिविर में २० बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को समूहों में बाँट दिया गया और उन्हें शिविर के तीसरे दिन के लिए विषय दिए गये। उन्होंने 'प्रकृति 'पर कोलाज़ बनाये। संगीत के सत्र में, उन्होंने गाने गाये और एक गाना सीखा जो उन्हीं में से कुछ बच्चों द्वारा बनाया गया था। शाम के समय अंतरिक्ष विद्या सभी के द्वारा पसंद की गई। बच्चों ने रस्सी के द्वारा दीवार से नीचे उतरने का साहसिक कार्य किया जो पेशावर प्रशिक्षकों की देख रेख में किया गया था। उन्होंने अनेक सामूहिक खेल खेले जिसमें समूह कार्य, नव–निर्माण और मज़ाक भरे खेल शामिल थे। कला एवं शिल्प सत्र में, बच्चों ने रंगीन फोटो फ्रेम बनाये जिसमें उनकी समूह फोटो चिपकाई गई थी और स्मारक रूप में भेंट की गई। 'ऊर्जा' पर एक प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया गया। संपूर्ण आश्रम एक विशेष वातावरण से निमग्न था जो निर्दोष जवां दिलों का पोषण कर रहा था।

पीलिभीत, उत्तर प्रदेश

१०–१४ वर्ष की आयु वर्ग वाले बच्चों ने पीलिभीत केंद्र पर आयोजित शिविर में उत्साहपूर्वक भाग लिया जो २५ मई से ३ जून तक १० दिन के लिए था उनकी कक्षाओं का निर्धारित समय प्रातः ६:३० बजे से ९:३० बजे तक था। यह खुश–नुमा सत्र था जो हँसी, प्रेरणा और शिक्षा से भरपूर था। खेल, चित्रकला और निबन्ध लेखन के साथ सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित अनेकानेक गतिविधियां हुईं। आखिरी दिन, अभिभावकों और संरक्षकों के लिए एक ओपन हाऊस आयोजित किया गया। ग्रीष्म कालीन शिविर से अपने बच्चों के व्यवहार में सुधार को देख कर प्रतिभागियों ने अपनी खुशी का इज़हार किया।

सूचनायें

मालिक का ८६ वां जन्मदिवस समारोह

सभी अभ्यासी दिनांक २३ से २५ जुलाई तक डायमंड जुब्ली पार्क, तिरुपुर (तमिलानाडु) में होने वाले समारोह में भाग लेने के लिये आमंत्रित हैं।

नये जोन–प्रभारियों की नियुक्तियां

जोन २ए– (उत्तरी तमिलनाडु)

भाई बी.एस.मुरुगन (होसुर) ने भाई एस.प्रकाश से पदभार लिया।

जोन ८ – मध्य प्रदेश

भाई प्रभाकर दास (भोपाल) ने भाई विकल्प मूंदड़ा से पदभार लिया।

जोन १२बी– यू.पी. सेंट्रल

भाई अशोक गर्ग (लखनऊ) ने भाई श्यामजी मेहरोत्रा से पदभार लिया।

रिट्रीट सेन्टर, पानशेत

भाई डॉ. राजेन्द्र राठौर ने भाई टी. मन्जूनाथ से, १५ जून २०१२ से प्रबंधक पद का भार लिया।

क्रेस्ट बेंगलोर

बहन सीथा कुन्चिथापदम ने मई २०१२ से भाई डॉ ए. पेरुमल से निर्देशक (डाइरेक्टर) का पदभार लिया।

"प्रियतम की याद प्रेमी को उसके निकट खींच लाती है। इस निकटता की कोई सीमा नहीं है। जितना अधिक प्रेम या आकर्षण होगा उतनी ही उसकी ओर प्रगति होगी। यह रिश्ता हमे धरोहर के रूप मे मिला है। अब यह हम पर है कि इसे इतना विकसित करें कि हम अपने आप को उसके निकटतम पायें।"

"रामचन्द्र की सम्पूर्ण कृतियां, भाग १, अध्याय "नियम २", पृष्ठ २०७, बाबूजी महाराज के द्वारा

पुलगांव आश्रम का उद्घाटन

मालिक नें २२ अप्रैल को वीडियो द्वारा महाराष्ट्र के पुलगांव आश्रम का उद्घाटन किया और फिर वहां उपस्थित अभ्यासियों के लिये सत्संग संचालित किया। क्षेत्रीय–प्रभारी भाई वैद्य के साथ कुछ अभ्यासी मणपाक्कम में मालिक के साथ उपस्थित थे।

पुलगांव आश्रम छोटा और सुन्दर है जो कुल १०४९४ वर्ग फीट ज़मीन पर बना है। २२९० वर्ग फीट पर बने हुए ३०० अभ्यासियों की क्षमता वाले ध्यान कक्ष के साथ पुस्तकालय, रसोई, सर्विस काऊंटर और शौचालय भी है। पुलगांव, अमरावती, वर्धा, यवतमाल, चन्द्रपुर, और नागपुर केंद्रों से आये २०० से अधिक अभ्यासी समारोह में उपस्थित थे। अभ्यासियों की उन्नति के लिये आवश्यक सब कुछ देकर मालिक ने अपने प्यार से उनके दिलों को भर दिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

जोधपुर, राजस्थान

३ जून को "बंधुत्व" पर कार्यशाला आयोजित की गई। सभी अभ्यासियों नें इस प्रार्थना के साथ कि मालिक हमें जो बनाना चाहते हैं वह हम बनें, उत्साहपूर्वक और सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया। भोजन के बाद, पूरा सत्र स्वयं के आत्म निरीक्षण के लिये रखा गया कि हमारी ओर से और क्या किया जाना चाहिये। प्रत्येक अभ्यासी का यही विचार था कि बदलने को तैयार हों, तय करें कि क्या बदलना है और उस पर अमल करें। सभी अभ्यासियों का मत था कि हमें आज्ञाकारी बनकर, अनुशासित होकर साधना और सेवा करके मालिक को सहयोग देना है। हममें से हरेक की गहराई में जो प्यार है वो सिर्फ मालिक को ही समर्पित होना चाहिये। मालिक खुद उदाहरण और मूर्तरूप होकर सिखाते हैं कि वे हमसे क्या चाहते हैं। शाम को सत्संग के बाद एक नई शुरुआत की प्रार्थना के साथ सत्र का समापन हुआ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिलॉन्ग, मेघालय

६ मई को शिलॉन्ग में पहली बार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उदेश्य था चिंतन एवं अवलोकन के माध्यम से ध्यान के तरीके को सीखना। इस कार्यक्रम के दौरान आडियो, वीडीयो क्लिप्पिंग्स, प्रस्तुतीकरण तथा बाबूजी महाराज का वीडीयो जिसका शीर्षक "मैं तुम्हे बताता हूँ" था। कार्यक्रम में भाग लेने वालों ने उनके द्वारा किये जा रहे ध्यान के तरीके में बद्लाव की जरुरत को महसूस किया।

इन्दौर, मध्य प्रदेश

२६ मई को इंदौर आश्रम में करीब २० अभ्यासियों ने डायरी लेखन पर आधारित कार्यक्रम 'अभ्यास में आदत डालना' (Grounding in the Practice) में भाग लिया। इस कार्यक्रम का आरम्भ सत्संग से तथा समापन पूज्य मालिक का वीडीयो दिखाकर हुआ। अभ्यासीयों ने अपनी डायरी लिखने की आदत एवं लिखने के तरीके का आत्मनिरिक्षण किया एवं सन्बंधित बिंदुओ को नोट किया। पूज्य मालिक के उद्धरणों को दिखलाया गया तथा उसके पश्चात सामूहिक चर्चा हुई। कार्यक्रम का समापन पूज्य मालिक की वार्ता "नेकेड सेल्फ" से किया गया तथा डायरी लिखने की महत्ता को दिखलाया गया।

उत्तर प्रदेश

१३ एवं २० मई को गोरखपुर केंद्र में सफाई एवं डायरी लेखन पर आधारित कार्यक्रम 'अभ्यास में आदत डालना' आयोजित किया गया जिसमें करीब ३० अभ्यासियों ने भाग लिया। भाग लेने वाले अभ्यासियों को पढ़ने को तथा उसके पश्चात अपने भावों को एक-दूसरे से आपस में बांटने के लिये कहा गया। दूसरे सत्र के दौरान अभ्यासियों को पूज्य मालिक के द्वारा दी गयी वार्ता दिखाई गयी और अभ्यासियों से कुछ प्रश्न पूछे गये और उनका उत्तर डायरी में लिखने के लिये कहा गया। सफाई एवं डायरी लिखने के दो मापदंडों को शामिल किया गया तथा बहराइच एवं बलिया केन्द्रो पर भी कार्यक्रमों की शुरुवात की गयी।

योजना शिविर, मैसूर, कर्नाटक

१९ एवं २० मई को मैसूर आश्रम में दक्षिण कर्नाटक मंडल के विभिन्न जिलों एवं केन्द्रों के समन्वय कर्ताओं के लिये योजना शिविर आयोजित किया गया। इस मंडल में १३ समन्वयकर्ता हैं जिन्हें बैंगलोर स्थित सहायता केन्द्रों के स्वयं सेवकों का समर्थन रहता है। इस शिविर की शुरुवात एक महत्वपूर्ण सत्र से हुई जिसमे भाग लेने वालों ने अपना परिचय दिया। उसके बाद क्षेत्रीय प्रभारी ने अपने क्षेत्र की स्थिति के बारे में बताया। भाग लेने वाले अभ्यासियों ने ग्रुप बनाकर केन्द्रों की वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की। पिछले एक साल में संचालित किये गये महत्वपूर्ण क्रियाकलापों एवं केन्द्रों के समक्ष चुनौतियों की चर्चा की। दूसरे दिन सत्संग के तुरंत बाद पूज्य मालिक का एक वीडीयो "कर्तव्य एवं जिम्मेदारी" दिखाया गया। अभ्यासी समूहों ने केन्द्रों की गुणवत्ता बढ़ाने एवं वहां पर अभ्यासियों की संख्या बढ़ाने के बारे में चर्चा की। बड़े केन्द्रों ने आश्रम के रख-रखाव से संबधित क्रिया कलापों के बारे में चर्चा की। इस बात पर जोर दिया गया कि योजना बनाते समय लक्ष्य निर्धारित करने से ज्यादा ह्रदय पर आधारित तरीके को ज्यादा महत्व दिया जाए। सभी अभ्यासियों ने खुलकर भाग लिया तथा सामान्य समस्याओं के बारे में नई अंतर्दृष्टि पाकर खुश हुए।

गोधरा, गुजरात

पहले स्तर का अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम (ए टी पी लेवल-१) १३ नये अभ्यासियों के लिये के लिये अहले से निर्धारित प्रारूप के अनुसार १९ मई को गोधरा आश्रम में संचालित किया गया। कार्यक्रम में कुछ मेहमान एवं अभ्यासियों के रिश्तेदार भी शामिल हुए। प्रशिक्षण के बाद प्रश्न-उत्तर सत्र हुआ। नये अभ्यासियों एवं मेहमानों को एक प्रावेशिक किट दी गयी। यह कार्यक्रम बहुत ही प्रोत्साहन एवं नये अभ्यासियों के लिये आँखे खोलने वाला था।

रतलाम केन्द्र, मध्यप्रदेश

रतलाम पश्चिमी मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण जिलों में से एक है जो मालवा क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। रतलाम शहर जिले का प्रशासनिक मुख्यालय एवं महत्व पूर्ण व्यापारिक केन्द्र है। मुंबई एवं देहली से रतलाम शहर पहुंचने में ट्रेन से बारह घंटे से भी कम समय लगता है। सब से करीबी हवाई अड्डा इन्दौर में है । यह मध्यप्रदेश के अन्य भागों से और सीमावर्ती राज्यों गुजरात और राजस्थान से सड़क से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। इन्दौर, उज्जैन और वड़ोदरा मिशन के केन्द्र हैं जो इस के पास ही हैं।

रतलाम रेल्वे स्टेशन से ६ किलोमीटर दूरी पर प्रदेश के राजपथ क्रमांक १० पर आश्रम स्थित है। आश्रम का कुल क्षेत्रफल १४५०० वर्गफुट है। १२०० वर्गफुट में एक ध्यान कक्ष बनाया गया है जो लगभग १०० अभ्यासियों को समायोजित कर सकता है। इसके अलावा इसमें रसोई घर और सुव्यवस्थित उद्यान भी है।

आश्रम एक आवासीय कॉलोनी का हिस्सा है जिस के सभी प्लॉट अभ्यासियों के हैं। मिशन की ओर से भाई उमा शंकर बाजपई ने जमीन से संबंधित औपचारिकताएं पूरी करी। मालिक ने फिर नवनिर्मित आश्रम में २७ जून २०१० से ध्यान प्रारम्भ करने की अनुमती प्रदान की। वर्तमान में रतलाम केन्द्र में लगभग पेंहसठ (६५) अभ्यासी हैं।

मिशन का प्रारम्भ यहां १९९३ में बहुत थोड़े अभ्यासियों से हुआ था। एप्रैल २००४ में केन्द्र में प्रशिक्षक बनाये जाने तक इन्दौर और उज्जैन जैसे केन्द्रों से प्रशिक्षक इस केन्द्र को सहयोग करने आते थे। २०१० में नवनिर्मित आश्रम में ध्यान प्रारम्भ करने के पहले व्यक्तिगत पूजायें, रविवार और बुधवार के सत्संग और उत्सव एक अभ्यासी भाई के घर पर होते थे। अभ्यासियों ने मिलकर सन २००५ में आश्रम के लिये जमीन खरीदी।

केन्द्र में नये अभ्यासियों के लिये कार्यशाला, ओपन हाउस, विभिन्न स्कूलों में निबन्ध लेखन, आध्यात्मिकता के जिज्ञासुओं के लिये 'वेल्कम डेस्क' जैसी गतिविधियां संचालित की जाती हैं। यह केन्द्र पड़ोस के छोटे केन्द्रों जैसे खाचरोद, जावरा, मन्दसौर, नीमच, खोर (विक्रम सीमेंट) और बान्सवारा के अभ्यासियों को रविवार एवं अन्य दिन भर के कार्यक्रमों में मेजबान बन कर सहयोग प्रदान करता है।

रतलाम केन्द्र के अभ्यासियों को पूज्य मालिक की यात्रा की मेजबानी करने का सौभाग्य नहीं मिला है लेकिन वे सभी इस अवसर के लिये दिल में कसक रखते हैं। फिर भी वे अच्छी तरह से इस तथ्य को संजोना चाहते हैं कि (रतलाम से ३३ कि.मी. दूर एक गांव) रेओती जाते समय पूज्य लालाजी महाराज रतलाम आये थे और बाबा मूरख दास के आश्रम में रुके थे जो आज के आश्रम के पास ही स्थित है। (रामचंद्र की संपूर्ण कृतियां भाग २ पृष्ठ क्र. १२२)

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.